Toppersnotes
Unleash the topper in you

2nd – ग्रेड

वरिष्ठ अध्यापक

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

प्रथम – प्रश्न पत्र

भाग – 3

सामान्य अध्ययन (विश्व एवं भारत)

SIERRA INNOVATIONS

RPSC 2ND GRADE – 2021

सामान्य अध्ययन (भारत एवं विश्व)

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	विश्व के महाद्वीप	1
2.	विश्व के महासागर	19
3.	विश्व की पवन प्रणाली	31
4.	भारतीय भूगोल (विस्तार एवं स्थिति)	38
5.	भारत के भौगोलिक भू-भाग	43
6.	भारतीय मानसून तंत्र	72
7.	भारत का अपवाह तंत्र	81
8.	भारत की प्रमुख झीलें	96
9.	भारतीय कृषि	100
10.	भारत के उद्योग	107
11.	विश्व एवं भारत की जनगणना	112
12.	सामाजिक सुरक्षा से संबंधित योजनाएँ	121
13.	राष्ट्रीय आय	129
14.	भारत की विदेश नीति एवं नेहरू का योगदान	136
15.	भारत की विदेश नीति का विकास	144
16.	महात्मा गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन	147
17.	संवैधानिक विकास की पृष्ठभूमि	158
18.	भीमराव अंबेडकर एवं भारतीय संविधान का निर्माण एवं विशेषताएँ	165
19.	भारत में संघीय व्यवस्था	171
20.	संविधान के मूल अधिकार, नीति निदेशक तत्व एवं मूल कर्त्तव्य	177
21.	भारत का राष्ट्रपति (भाग 5-संघ)	181
22.	भारत का उपराष्ट्रपति	190

23.	भारत का प्रधानमंत्री एवं उसकी शक्तियाँ	194
24.	संविधान संशोधन	197
25.	राजनीतिक दल एवं उसकी भूमिका	204
26.	संयुक्त राष्ट्र संघ एवं भारत का योगदान	208
27.	भूमण्डलीकरण	218
28.	परमाणु अप्रसार नीतियाँ	220

1. विश्व के महाद्वीप

महाद्वीप का अर्थ

आपस में जुडी भूमि को महाद्वीप कहा जाता है, पूर्व में महाद्वीप शब्द का प्रयोग प्रायद्वीपीय क्षेत्रों या टापुओं को कहा जाता था। विश्व में कुल सात महाद्वीप है

एशिया → अफ्रीका → उत्तरी अमेरिका → द. अमेरिका → अण्टार्कटिका → यूरोप → ऑस्ट्रेलिया

- सर्वप्रथम यूनानी भूगोलवेत्ता स्ट्रेबों ने विश्व को दो भागों में बाँटा है –
  1. एशिया
  2. यूरोप
- हेरोडोट्स ने तीन भागों में बाँटा है –
  1. एशिया
  2. यूरोप
  3. अफ्रीका
- अमेरिका की खोज–कोलम्बस 1492 ई. में।
- आस्ट्रेलिया की खोज – जेम्स कुक द्वारा।
- पृथ्वी के कुल भाग के केवल 29.2% क्षेत्रफल पर महाद्वीप स्थित है।
- पृथ्वी के 70.8% क्षेत्र पर जल का विस्तार है।

महाद्वीप	क्षेत्रफल	जनसंख्या की दृष्टि से स्थान	क्षेत्रफल की दृष्टि से स्थान	सबसे लम्बी नदी	सबसे ऊँचा पर्वत	सबसे बडी झील	सागर से नीचे स्थित बिन्दू
1. एशिया	30.6%	प्रथम	प्रथम	यांगटिसिक्यांग	माउण्ट एवरेस्ट	कैस्पियन सागर	मृत सागर
2. अफ्रीका	20%	द्वितीय	द्वितीय	नील	किलिमंजारो	विक्टोरिया झील	असल झील
3. उत्तरी अमेरिका	16.3%	चतुर्थ	तीसरा	मिसीसिपी मिसौरी	मउण्ट मैकिले	सुपीरियर	डैथ वैली
4. दक्षिणी अमेरिका	11.8%	पाँचवाँ	चौथा	अमेजन	एकांकागुआ	टिटीकाका	वाल्डेस प्रायद्वीप
5. अंटार्कटिका	9.6%	–	पाँचवाँ	–	विंसन मौसिफ	–	बेंण्टले ट्रेंच
6. यूरोप **(2nd grade 1st Paper - 2019)**	6.5%	तृतीय	छठा	वोल्गा	माउण्ट एल्ब्रूस	लैडोगा	कैस्पियन सागर
7. आस्ट्रेलिया	5.2%	छठा	सतवाँ	मर्रे डार्लिंग नदी	माउण्ट कोस्यूस्को	आयर	आयर झील

एशिया महाद्वीप

- एशिया जनसंख्या तथा क्षेत्रफल की दोनों ही दृष्टिकोण से विश्व का सबसे बडा महाद्वीप है, जो कि पूर्वी व उत्तरी गोलार्द्ध में अवस्थित है।
- एशिया का कुल क्षेत्रफल 4 करोड 50 लाख वर्ग कि.मी. है, जो कि विश्व के कुल स्थल भाग का लगभग एक–तिहाई भाग है।
- इस महाद्वीप की जनसंख्या लगभग 4.4 अरब है।
- यूराल पर्वत, कैस्पियन सागर, काकेकस पर्वत, काला सागर, लाल सागर इसे यूरोप महाद्वीप से अलग करते है।
- स्वेज नहर एशिया को अफ्रीका से अलग करती है।
- एशिया व उत्तरी अमेरिका बेरिंग जल संधि द्वारा तो एशिया व ऑस्ट्रेलिया, न्यूगिनी द्वीप द्वारा आपस में जुडे है।
- अनातोलिया का पठार (तुर्की) प्राचीन शैलों से बना है, जो पोण्टिक व टौरस पर्वत के मध्य स्थित है।
- एशिया में तटीय बेसिन व गोबी का विशाल ठण्डा मरूस्थल है।
- काराकोरम पर्वत श्रृंखला जम्मू कश्मीर तथा पाकिस्तान के उत्तर–पश्चिम भाग में फैली है, जिसकी सर्वोच्च चोटी गॉडवीन ऑस्टिन (8611 मी.) है, जो माउण्ट एवरेस्ट के बाद विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है।
- एशिया में सिंधु, गंगा–ब्रह्मपुत्र, इरावदी, मेकाँग, सिक्यांग, यांगटिसिक्यांग, दजला–फरात, ह्वांगहो नदियों का उपजाऊ क्षेत्र है।
- एशिया का विशाल आकार, व्यापक अक्षांशीय विस्तार तथा उच्चावच, यहाँ के विविध जलवायु के कारक हैं, पूर्वी द्वीप समूह जहाँ विषुवतीय जलवायु मिलती है।
- पश्चिम एशिया में उष्ण एवं शुष्क जलवायु पाई जाती है एवं कई मरूस्थलों का विस्तार है।
- यहाँ की जलवायवीय भिन्नता प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीवों की विभिन्नता को जन्म देती है। यहाँ पर एक ओर आर्कटिक टुण्ड्रा की काई और लाइकेन, दूसरी ओर दक्षिण–पूर्व एशिया के सधन वर्षा वन पाए जाते है।
- एशिया के उत्तरी तट के सहारे टुण्ड्रा वनस्पति पाई जाती है। अत्यधिक ठण्ड के कारण यहाँ काई और लाइकेन जैसी सूक्ष्म वनस्पति पाई जाती है। रेण्डियर यहाँ का मुख्य पशु है।
- यहाँ टुण्ड्रा प्रदेश के दक्षिण में शंकुधारी वृक्षों वाली टेगा वनस्पति पाई जाती है। चीड, फर, स्प्रूस आदि महत्वपूर्ण है।
- यहाँ शीतोष्ण कटिबंधीय घास के मैदान पाये जाते है, जिसे स्टेपीज कहा जाता है।
- एशिया के नेपाल के दक्षिणी भाग में दलदली तराई भाग है, इसके उत्तरी भाग में हिमालय पर्वत है, जिसमें विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (सागरमाथा) है। जिसकी ऊँचाई 8848 मीटर है।
- पाकिस्तान सर्वाधिक नहरो वाला देश है।
- भूटान में भारत की मदद से चोखा जल विद्युत परियोजना, ताला जल विद्युत परियोजना चलाई जा रही है।
- तकला माकन का ठण्डा रेगिस्तान तारिम बेसिन में अवस्थित है।
- एशिया की सबसे लम्बी नदी यांगटिसिक्यांग (6300 कि.मी.) है जो चीन में बहती है।
- ह्वांगहो नदी को बाढ की विभीषिका के कारण चीन का शोक कहा जाता है।
- चीन विश्व में कृषि उत्पादों का सबसे बडा उत्पादक एवं उपभोक्ता है। चावल, गेहूँ, कपास, तम्बाकू के उत्पादन में प्रथम स्थान रखता है।
- जापान "सूर्योदय का देश" कहलाता है, यहाँ फ्यूजीयामा नामक सक्रिय ज्वालामुखी स्थित है।
- जापान में आने वाले उष्ण कटिबंधीय चक्रवात टायफून कहलाते है।
- इण्डोनेशिया की सबसे ऊँची चोटी पुनकाक जाया है व क्राकातोआ यहाँ का प्रसिद्ध ज्वालामुखी पर्वत है।

एशिया में स्थित पर्वत

1. हिमालय – विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत
2. फ्यूजीयामा – जापान का सबसे बडा पर्वत
3. एल बुर्ज – आर्मिनियन गांठ से संबंध (ईरान)
4. हिन्दुकुश – पामीर गांठ के पश्चिम भाग में स्थित
5. मकरान – ईरान के दक्षिण–पूर्व में स्थित
6. सारामती शिखर – म्यांमार का सबसे ऊँचा पर्वत
7. स्टालिन – रूस का सबसे ऊँचा पर्वत
8. गॉडविन ऑस्टिन K-2 – भारत की सबसे ऊँची चोटी
9. नमक, किरथर – पाकिस्तान
10. अराकान योमा – म्यांमार
11. यूराल, बैकाल – रूस
12. ओलम्पस – साइप्रस
13. माउन्ट ऐपो – फिलीपीन्स
14. थ्यानशान – चीन का सर्वोच्च शिखर

एशिया में प्रमुख पठार

1. पामीर का पठार – ताजिकिस्तान (पामीर के पठार को दुनिया/विश्व की छत कहा जाता है।
2. अनातोलिया का पठार – तुर्की में स्थित है।
3. लोएस का पठार – उत्तरी चीन में स्थित है।
4. साइबेरिया का पठार – रूस में स्थित है।
5. तिब्बत का पठार – चीन के पश्चिम में स्थित है। यह विश्व का सबसे ऊँचा व सबसे बडा पठार है।

एशिया की प्रमुख नदियाँ

1. यांगटिसीक्यांग – एशिया की सबसे लम्बी नदी जो चीन में स्थित है।
2. ह्वांगहो नदी – चीन का शोक, पीली नदी।
3. यूराल नदी – रूस के यूराल पर्वत से निकलकर कैस्पियन सागर में गिरती है।
4. जोर्डन नदी – इजरायल
5. दजला नदी – इराक
6. फरात नदी – तुर्की
7. सीक्यांग नदी – यूनान के पठार से उद्‌गम इस नदी का प्रदेश चावल की कृषि के लिए प्रसिद्ध है।
8. मीकांग नदी – तिब्बत के पठार से निकलकर दक्षिणी चीन सागर में गिरती है।

नोट – (i) मिकांग नदी को "दक्षिण–पूर्वी एशिया की डेन्यूब" कहा जाता है।
(ii) विश्व का सबसे बडा डेल्टा गंगा–ब्रह्मपुत्र नदी क्षेत्र में "सुन्दर वन डेल्टा" है।

एशिया की प्रमुख झीलें

1. लेक बैकाल – यह विश्व की सबसे गहरी झील है जो रूस मे स्थित है।
2. लेक वॉन – विश्व की सबसे खारे पानी की झील है। जो तुर्की में स्थित है।
3. कैस्पियन सागर – विश्व की सबसे बडी व लम्बी झील जो दक्षिण–पश्चिम एशिया में स्थित है।
4. मृत सागर – संसार का सबसे गहराई/नीचे स्थित स्थान।

एशिया की प्रमुख जल संधियाँ

1. मलक्का जल संधि – मलेशिया व इण्डोनेशिया के मध्य **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**
2. बेरिंग जल संधि – प्रशान्त महासागर तथा आर्कटिक महासागर के मध्य (यह जल संधि एशिया को उत्तरी अमेरिका से अलग करती है) **[2nd Grade 1st Paper - 2019]**
3. पाक जल संधि – भारत तथा श्रीलंका के मध्य
4. फारमोसा जल संधि – पूर्वी चीन सागर तथा द. चीन सागर के मध्य (यह ताइवान व चीन के मध्य स्थित है)
5. होरमुज जल संधि – संयुक्त अरब अमीरात एवं ईरान के मध्य स्थित हैं।
6. सुण्डा जल संधि – जावा व सुमत्रा के मध्य।
7. बाव अल मंदेव जल संधि – लाल सागर व अदन की खाडी के मध्य स्थित है।

एशिया के प्रमुख सागर

क्रं.स.	नाम	महासागरीय भाग
1.	बेरिंग सागर	प्रशान्त महासागर
2.	ओखोटस्क सागर	प्रशान्त महासागर
3.	पूर्वी साइबेरियन सागर	आर्कटिक महासागर
4.	दक्षिण चीन सागर	उत्तरी प्रशान्त महासागर
5.	पूर्वी चीन सागर	प्रशान्त महासागर
6.	लाल सागर	हिन्द महासागर
7.	बंगाल की खाडी	हिन्द महासागर
8.	अरब सागर	हिन्द महासागर
9.	जावा सागर	प्रशान्त महासागर

एशिया के प्रमुख मरुस्थल

1. थार मरुस्थल – भारत व पाकिस्तान के मध्य
2. थाल मरुस्थल – पाकिस्तान
3. गोबी मरुस्थल – मंगोलिया
4. काला मरुस्थल – तुर्कमेनिस्तान

- जापान के ओसाका नगर को जापान का मैनचेस्टर कहते है।
- सर्वा. सूती वस्त्र के कारखाने चीन में है अतः इसके शंघाई शहर को चीन का मैनचेस्टर कहा जाता है।
- कौबा शहर (जापान) को खिलौना नगरी कहा जाता है।

एशिया में कृषि

- विश्व में सर्वप्रथम कृषि एशिया में प्रारम्भ हुई, यहाँ की 60% आबादी कृषि पर निर्भर है।
- एशिया में सबसे अधिक कृषि योग्य भूमि भारत में है।
- कजाकिस्तान में स्टेपी घास के मैदानी क्षेत्र को एशिया की रोटी भी कहा जाता है।
- इण्डोनेशिया के मल्लका द्वीप को "मसालों का द्वीप" कहा जाता है।
- उज्बेकिस्तान में कपास की अधिकता के कारण इसे कपास का बोरा कहा जाता है।

एशिया में स्थानांतरित कृषि के विभिन्न नाम

नाम	कृषि के नाम
1. इण्डोनेशिया	हुमाह / लडाग
2. श्रीलंका	चेन्ना
3. म्यांमार	टोंग्या (तोम्यो)
4. मलेशिया	लदांग
5. थाइलैण्ड	तमराई
6. उत्तरी–पूर्वी भारत	झूमिंग
7. राजस्थान	वालरा

- एशिया महाद्वीप विश्व का सर्वाधिक चावल उत्पादक देश है। चीन को "चावल का कटोरा" कहा जाता है, भारत विश्व में चावल उत्पादन में दूसरा स्थान रखता है।
- अमेरिका सर्वाधिक मक्का उत्पादित करता है।

चाय – भारत, श्रीलंका
गन्ना – ब्राजील, भारत
जूट – भारत, बांग्लादेश
टर्की – फलों का स्वर्ग
रेशम – चीन

एशिया में खनिज उत्पादन

- खनिज तेल – ईरान, रूस, सऊदी अरब
- कोयला – चीन (उत्पादन प्रथम), रूस (भण्डार प्रथम)
- टीन – चीन, भारत
- सोना, चाँदी – रूस

विभिन्न देशों के उपनाम

I. रत्नों का द्वीप – श्री लंका
II. मूँगों के द्वीपों का देश – मालदीव
III. एशिया का प्रवेश द्वार – तुर्की
IV. एशिया की नाडी – मंगोलिया
V. उगते सूरज का देश – जापान
VI. पेगोडों का देश – म्यांमार

- प्रशान्त महासागर का सबसे **गहरा गर्त मेरियाना ट्रैंच** है।
- रूस का **बर्खोयान्स्क विश्व** का सबसे ठण्डा प्रदेश है।
- विश्व का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान – मासिनराम (मेघालय), भारत
- विश्व का सबसे लम्बा रेलमार्ग – यिवु–मैड्रिड रेल्वे मार्ग
- यह रेल मार्ग 21 वीं शताब्दी का **"सिल्क रेलमार्ग"** कहा जाता है जो विश्व के 8 देशों से गुजरता है।
- ट्रांस–साइबेरियन रेलमार्ग :– विश्व का दूसरा लम्बा रेलमार्ग है। यह रूस के मास्को से जापान के ब्लाडीवोस्टक तक है।

ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप

- **यह विश्व का सबसे छोटा महाद्वीप है**, जो चारों ओर से सागरों से घिरा है। अतः इसे द्वीपीय महाद्वीप कहा जाता है।
- ऑस्ट्रेलिया सबसे कम जनसंख्या वाला महाद्वीप है जिनको जेम्स कुक के द्वारा 1770 में खोजा गया है।
- इसके उत्तर–पूर्व में प्रशान्त महासागर व दक्षिण–पश्चिम में हिन्द महासागर स्थित है।
- ऑस्ट्रेलिया 6 राज्य एवं 2 केन्द्र शासित प्रदेश में बँटा है।

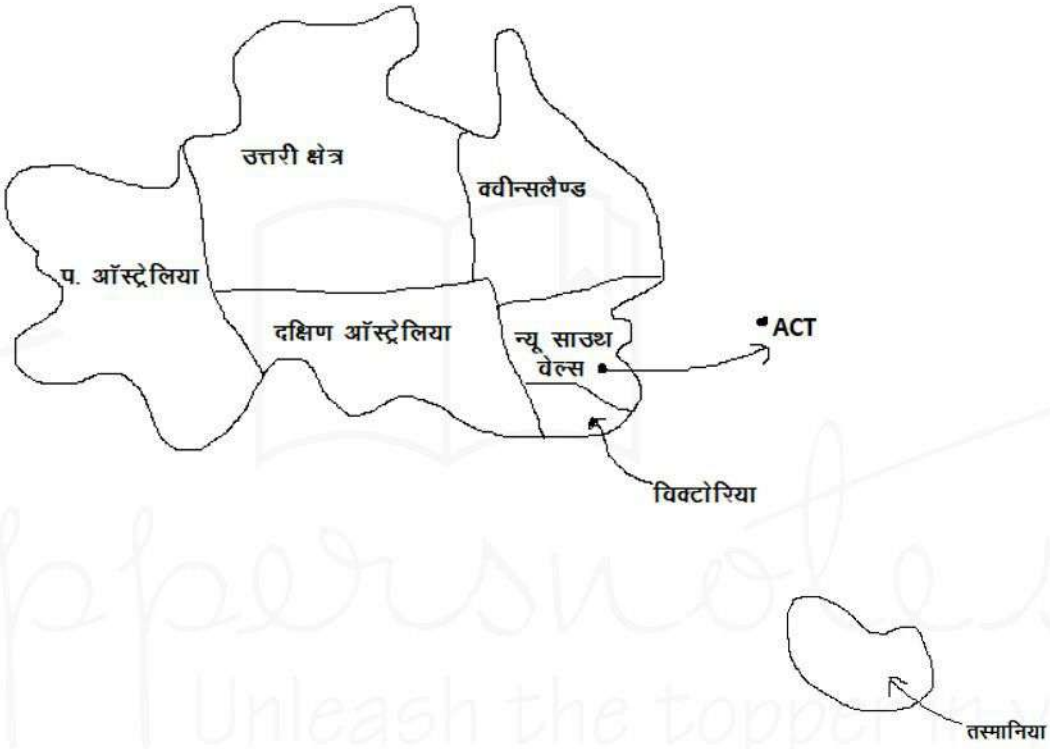

राज्य	राजधानी
प. आस्ट्रेलिया	पर्थ
द. आस्ट्रेलिया	एडीलेड
क्वीन्सलैण्ड	ब्रिस्बेन
न्यू साउथ वेल्स	सिडनी
उत्तरी क्षेत्र	डार्विन
विक्टोरिया	मेलबर्न

केन्द्र शासित प्रदेश	राजधानी
1. केनबरा ऑस्ट्रेलिया केपिटल टेरीटरी (ACT)	केनबरा
2. तस्मानिया	होबार्ट

नदियाँ	झील	पर्वत
1. डार्लिंग नदी **[2nd Grade 1st Paer - 2016]** 2. मुर्रे नदी (सर्वाधिक लम्बी) 3. विक्टोरिया नदी 4. मुर्म ब्रिज या मुरूम बिडगी	1. बार्ली 2. वेल्स 3. मूर 4. टोरेन्स 5. आयर (यह 6.ऑस्ट्रेलिया की सबसे बडी झील है)	1. ग्रेट डिवाईडिंग रेंज 2. ब्लू माउन्टेन 3. ग्रे रेज 4. ऑस्ट्रेलियन आल्पस 5. ब्रोकन हिल्स 6. डस्टन श्रेणी 7. रेनाल्ड श्रेणी 8. ग्राम पियन श्रेणी कोस्यूस्को यह ऑस्ट्रेलिया की सर्वोच्च चोटी है। **[2nd Grade 1st Paper - 2016]**

मरुस्थल	खनिज	परिवहन
1. सिम्पसन 2. स्टुवर्ट 3. गिब्सन 4. ग्रेट विक्टोरिया मरुस्थल 5. ग्रेट सैंडी	1. सर्वाधिक यूरेनियम 2. सोने के सर्वा. भण्डार कुलगार्डी, कालगुर्ली सोनें की खानें है। 3. कोयला, लौहा, मैंगनीज मुख्य खनिज है।	1. ट्रांस कॉन्टिनेटल स्टुअर्ट हाइवे सबसे लम्बा सडक मार्ग है। 2. ऑस्ट्रेलिया में सडकों को कॉमन वैल्थ महामार्ग कहा जाता है। 3. ऑस्ट्रेलिया ट्रांस कॉन्टिनेटल रेलवे मार्ग ऑस्ट्रेलिया का सबसे लम्बा रेल मार्ग है।

नोट – आस्ट्रेलिया के उपनाम "द लैण्ड ऑफ गोल्डन फ्लीस" न्यू हॉलैण्ड

- विश्व की सबसे लम्बी मूंगा निर्मित दीवार **"ग्रेट बैरियर रीफ"** इसके पूर्वी तट के पास प्रशान्त महासागर में स्थित है। इसे "पानी में बगीचा" भी कहा जाता है। **[2nd Grade 1st Paper - 2019]**
- ऑस्ट्रेलिया शुष्क महाद्वीप है अतः इसे प्यासी भूमि का देश कहा जाता है।
- यहाँ पाये जाने वाले **उष्ण कटिबंधीय एवं शीतोष्ण कटिबंधीय** घास के मैदानों को **सवाना, डाउन्स** कहा जाता है।
- यहाँ कंगारू, कोला, वलाबीज, वमटब, पोशमस आदि पशु–पक्षी पाये जाते है।
- ऑस्ट्रेलिया में पाये जाने वाले "कोकाबर्रा" को लॉफिंग जैकास कहा जाता है, क्योंकि उसकी बोली किसी के हँसने जैसी है।
- ऑस्ट्रेलिया सर्वा. ऊन उत्पादक महाद्वीप है, यहाँ विश्व प्रसिद्ध मेरीनो भेड पाली जाती है।
- ऑस्ट्रेलिया में पाया जाने वाला ऐमू बडे आकार का पक्षी है जो उड नहीं सकता लेकिन शुतुरमुर्ग की भाँति तेज दौड सकता है।

अंटार्कटिका महाद्वीप

- यह विश्व का पाँचवा बडा महाद्वीप है, जो बर्फ से ढके होने के कारण **श्वेत महाद्वीप** कहलाता है।
- "फेबियन विलियम शॉसेन" अंटार्कटिका पहुँचने वाले प्रथम व्यक्ति थे।
- यह जनशून्य (मानव रहित) महाद्वीप है।
- ट्रांस अंटार्कटिका पर्वत इसको दो भागों में बाँटता है।
- यहाँ विश्व का सबसे बडा ग्लेशियर **लैंबर्ट** स्थित है।
- अंटार्कटिका की सर्वोच्च चोटी "विन्सन मैसिफ" है।
- यहाँ व्हेल व सील मुख्य स्तनधारी जीव पाये जाते है।

- अंटार्कटिका विज्ञान व वैज्ञानिको के लिए अनुसंधान स्थल होने के कारण इसे "विज्ञान के लिए समर्पित महाद्वीप" कहा जाता है।
- यहाँ पर पाये जाने वाले प्रथम भारतीय गिरिराज सिंह सिरोही थे, इनके नाम पर यहाँ एक स्थान का नाम सिरोही पॉईंट रखा गया है। यहाँ भारत का प्रथम वैज्ञानिक दल जेड. आर. कासिम के नेतृत्व में 1981 में गया था।
- भारत 1985 में अंटार्कटिका के समुद्रीय जैव संरक्षण के सदस्य बने।
- भारत ने 1984 में अंटार्कटिका पर पहला स्थायी शोध केन्द्र दक्षिणी गंगोत्री स्थापित किया था।
- मैत्री संस्थान – 1993 **[2nd Grade 2nd Paper SST - 2018]**
- भारती केन्द्र – 2009 **[2nd Grade 2nd Paper SST - 2018]**
- एर्बुस शिखर यहाँ एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी है।

अफ्रीका महाद्वीप

- अफ्रीका महाद्वीप संसार का दूसरा बडा महाद्वीप है, जिसका क्षेत्रफल पृथ्वी के कुल क्षेत्रफल का 20% व विश्व की 12% जनसंख्या निवास करती है।
- अफ्रीका विश्व का सबसे प्राचीन स्थलखण्ड व गोंडवाना लैण्ड का भाग है।
- अफ्रीका महाद्वीप के उपनाम –
  1. काला महाद्वीप
  2. अंध महाद्वीप **[2nd Grade 1st Paper - 2019]**
  3. भविष्य का महाद्वीप
- अफ्रीका एक मात्र ऐसा महाद्वीप है जिनसे विषुवत रेखा (भूमध्य रेखा), कर्क रेखा, मकर रेखा तीनों अक्षांश रेखाएँ गुजरती है। अतः इस महाद्वीप का अधिकांश भाग ऊष्ण कटिबंधीय है।
- अफ्रीका महाद्वीप को एशिया से लाल सागर व यूरोप से भूमध्य सागर अलग करता है।

नोट – अफ्रीका महाद्वीप चारों गोलार्द्धों में स्थित है।

- अफ्रीका महाद्वीप एशिया से स्वेज जल संधि द्वारा जुडा हुआ हैं, वहीं यूरोप से जिब्राल्टर जल संधि जोडती है।

जलवायु

- अफ्रीका महाद्वीप में ऊष्ण कटिबंधीय जलवायु का विस्तार है।

भारत की विदेश नीति एवं नेहरू का योगदान

- एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र के साथ संबंध स्थापित करने, अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने एवं युद्ध तथा शांति के प्रश्नों में अपनी भूमिका निभाने के लिए जो कार्यक्रम एवं नीतियाँ अपनाई जाती है, उसे ही उस राष्ट्र की विदेश नीति कहते हैं।
- विदेश नीति उन सिद्धान्तों का समूह है जो एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के साथ अपने संबंधों के दौरान अपने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने के लिए अपनाता हैं।
- राष्ट्रीय हित का अभिप्राय अपने देश की विदेशी आक्रमणों से सुरक्षा, प्रादेशिक अखण्ड़ता, देशवासियों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना, औद्योगिक उन्नति, आर्थिक समृद्धि तथा सर्वांगीण विकास हैं।
- **जॉर्ज मौडेल्सकी** ''विदेशी नीति उन क्रियाकलापों का समुच्चय है जो किसी समुदाय ने अन्य राज्यों का व्यवहार बदलने के लिए और अपने क्रिया कलापों को अन्तरराष्ट्रीय परिस्थिति के साथ समायोजित करने के लिए विकसित किया हो ।''

विदेश नीति के अध्ययन के अंतर्गत निम्न चीजें आती हैं

- नीति– निर्माण
- विदेश नीति के सिद्धान्त
- हित और उद्देश्य
- विदेश नीति के सिद्धान्त
- राष्ट्रीय हित की विचारधारा से निर्धारित विदेशी संबंधों में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपनाया गया सुविचारित कार्यक्रम ही विदेश नीति हैं।
- **फैलिक्स ग्रास** ने बताया कि ''विदेश नीति के अध्ययन को एक विज्ञान या अनुशासन (स्वतन्त्र अध्ययन विषय) मानना चाहिए।''
- विदेश नीति का अर्थ दूसरे देशों के साथ संबंध रखना और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक एवं आर्थिक गतिविधियों में भाग लेना हैं।
- विदेश नीति दो बड़े उद्देश्यों की पूर्ति करता है –
  (i) राष्ट्रीय हितों की रक्षा और बढ़ावा।
  (ii) भूमण्ड़लीय विषयों जैसे – शांति, विकास, न्याय, उपनिवेशवाद उन्मूलन आदि में सहभागिता।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही हमारी विदेश नीति ने साकार स्वरूप लेना प्रारम्भ कर लिया था। स्वतंत्र विदेश नीति का पं. जवाहर लाल नेहरू का संकल्प हमारे सामने था। द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् विश्व का दो गुटों में बँटना व अन्य राष्ट्रों द्वारा अनुवृत्ति गुट बनना जारी था। भारत ने इनमें पृथक रीति–नीति अनुसरण किया। हमारा यह भी संकल्प था कि हम विश्व में उपनिवेशवाद, रंग–भेद व साम्राज्यवाद का विरोध करेंगे। विदेश नीति का जो ताना–बाना हमने उस समय बुना उसकी प्रमुख विशेषताएँ ये हैं –

(1) शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की नीति
(2) उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विरोध
(3) रंगभेद का विरोध
(4) अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को समर्थन
(5) पंचशील के सिद्धांत पर आधारित विदेश नीति
(6) गुट निरपेक्षता की नीति

(7) विरोधी गुटों के बीच सेतुबंध बनाने की नीति
(8) साधनों की पवित्रता की नीति
(9) संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन करने वाली नीति
(10) विकास सहायता की नीति

- 1921 ई. में कांग्रेस ने पहली बार विदेश नीति के संबंध में एक पूर्ण प्रस्ताव पारित किया जिसमें कहा गया था कि भारत अपने पड़ोसियों तथा अन्य राज्यों से अच्छे तथा मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का इच्छुक हैं।
- पड़ोसी राष्ट्रों से मधुर संबंध और सभी राष्ट्रों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने का यह प्रस्ताव आज भी भारतीय विदेश नीति का एक आधारभूत सिद्धान्त हैं।
- 1927 ई. के मद्रास अधिवेशन में कांग्रेस ने चीन, मेसोपोटामिया तथा एशिया (ईरान) में भारतीय सैनिकों के प्रयोग का विरोध किया।
- विश्व भर में पराधीन लोगों के साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन को संगठित करने तथा सहायता देने के लिए कांग्रेस ने 1928 ई. में कलकत्ता अधिवेशन के दौरान विदेश विभाग की स्थापना का निर्णय लिया।
- पं. जवाहरलाल नेहरू कांग्रेस के इस विदेश विभाग के अध्यक्ष बने। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान पं. जवाहरलाल नेहरू भारतीय विदेश विभाग के निदेशक के रूप में काम करने लगे।
- 1939 ई. में कांग्रेस ने त्रिपुरा अधिवेशन में भारत द्वारा अपनी विदेश नीति स्वयं बनाने तथा संचालन करने के अधिकार की माँग की।
- 1945 से 1947 ई. तक कांग्रेस ने कई–प्रस्तावों तथा घोषणाओं द्वारा कहा कि सभी देशों को स्वतंत्र होने का अधिकार है अर्थात् आत्म निर्णय के अधिकार का समर्थन किया।
- संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना का भारत ने स्वागत् किया, परन्तु इस संगठन पर महाशक्तियों के अनावश्यक नियंत्रण के प्रति असंतोष भी व्यक्त किया।
- भारत की विदेश नीति की रूपरेखा तैयार करने का श्रेय पं. जवाहरलाल नेहरू को दिया जाता हैं।
- भारत की विदेश नीति का मुख्य आधार गुटनिरपेक्षता, सद्भावना एवं निःशस्त्रीकरण हैं।
- भारत की विदेश नीति की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए पं. जवाहरलाल नेहरू ने सितम्बर, 1946 में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था, ''वैदेशिक'' संबंधों के क्षेत्र में भारत एक स्वतंत्र नीति का पालन करना है।
- गुटबाजी से दूरी बनाये रखते हुए विश्व के सभी पराधीन देशों को आत्मनिर्णय का अधिकार प्रदान करने तथा जातीय भेदभाव की नीति का उन्मूलन करने का प्रयास करेगा। साथ ही विश्व के शांति प्रिय देशों के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और सद्भावना के प्रचार के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहेगा।''
- नेहरू का यह कथन आज भी भारतीय विदेश नीति का आधार – स्तम्भ हैं।
- भारत की विदेश नीति का समावेश संविधान के अनुच्छेद 51 में किया गया हैं। भारतीय विदेश नीति के मूल सिद्धान्त निम्न हैं –
  (i) राज्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा को बढ़ावा देगा
  (ii) राज्य राष्ट्रों के बीच न्याय और सम्मानपूर्वक संबधों को बनाये रखने का प्रयास करेगा
  (iii) राज्य अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों तथा संधियों का सम्मान करेगा
  (iv) राज्य अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों को पंच फैसलों द्वारा निपटाने की कोशिश करेगा।
- भारत की विदेश नीति के मुख्य आदर्श एवं उद्देश्य (Objects) इस प्रकार हैं –
  (i) अन्तर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए हरसंभव प्रयास करना।
  (ii) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का मध्यस्थता या पंच द्वारा निपटारा।
  (iii) पड़ोसी राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने के प्रयास करना।

(iv) अन्तर्राष्ट्रीय कानून या नियमों के प्रति और सभी राष्ट्रों के बीच संबंधों में संधियों के पालन के प्रति विश्वास बनाये रखना।

(v) गुटनिरपेक्षता को प्रोत्साहन प्रदान करना।

(vi) उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद का विरोध करना।

(vii) उपनिवेशवाद, जातिवाद और साम्राज्यवाद से पीड़ित जनता को आन्दोलन के लिए प्रेरित करना।

(viii) दक्षिण एशिया में अपने पड़ोसी देशों के साथ मैत्री और सहयोग को मजबूत करना हमारी विदेश नीति की प्रमुख प्राथमिकता हैं।

- भारत की विदेश नीति के निर्माता पं. जवाहरलाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति के तीन आधार स्तम्भ बताये हैं – (1) शांति (2) मित्रता (3) समानता।
- किसी भी देश की विदेश नीति का आधार उसका राष्ट्रीय हित होता हैं।
- राष्ट्रीय हित के कारण ही भारत ने गोवा को स्वतंत्र कराने के लिए सैन्य बल का प्रयोग किया।
- राष्ट्रीय हित की प्राथमिकता के कारण ही भारत गुट निरपेक्षता का संदेशवाहक होते हुए भी 9 अगस्त, 1971 में सोवियत संघ से 20 वर्ष के लिए स्थायी मैत्री एवं सहयोग संधि की।

भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ/मूल तत्व या सिद्धान्त

भारतीय विदेश नीति की प्रमुख विशेषताएँ/सिद्धान्त निम्न हैं –

(1) गुटनिरपेक्षता की नीति (The Policy of Non-Alignment)

- अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय को गुटनिरपेक्षता की नीति भारत का सबसे महत्वपूर्ण योगदान हैं।
- सर्वप्रथम गुटनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग 1947 में वी.के. मेनन द्वारा किया गया।
- गुटनिरपेक्षता को भारतीय विदेश नीति का सार तत्व कहा जाता हैं।
- पं. जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "स्वतंत्र भारत अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एक स्वतंत्र नीति का पालन करेगा और किसी गुट में शामिल नहीं होगा।"
- भारत ने पूँजीवादी गुट (अमेरिका) व साम्यवादी गुट (सोवियत संघ) दोनों गुटों से अलग रहने की जो नीति अपनायी उसे 'गुटनिरपेक्षता की नीति' कहा जाता हैं।
- भारत की गुटनिरपेक्षता एक विधेयात्मक, सक्रिय और रचनात्मक नीति हैं।
- इसका उद्देश्य किसी दूसरे गुट का निर्माण करना नहीं वरन् दो विरोधी गुटों के बीच संतुलन का निर्माण करना हैं।
- अमेरिकी सीनेट में नेहरू ने कहा कि ''यदि विश्व में कहीं स्वतंत्रता का हनन होगा, न्याय की हत्या होगी अथवा कहीं आक्रमण होगा, तो वहाँ हम न तो आज तटस्थ है और न ही भविष्य में तटस्थ रहेंगे।''
- गुटनिरपेक्षता का अर्थ हैं –
  (i) गुटों से अलग रहना।
  (ii) शीत युद्ध में भाग न लेना।
  (iii) प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय समस्या पर गुण–दोषों के आधार पर फैसला करना।
  (iv) विरोधी गुटों के बीच संतुलन बैठाये रखना हैं।
- वर्ष 1950 से 1957 के काल में सोवियत संघ के प्रति भारत का दृष्टिकोण उदार होने लगा, क्योंकि इस काल में 1954 में अमेरिका और पाकिस्तान के मध्य एक सैनिक संधि हुई जिसके अनुसार अमेरिका ने पाकिस्तान को विशाल पैमाने पर शस्त्र देने का फैसला किया।

- गोवा के प्रश्न पर अमेरिका ने पुर्तगाल का समर्थन किया, जबकि सोवियत संघ ने भारतीय नीति का हमेशा समर्थन किया।
- नवम्बर, 1962 में चीनी आक्रमण के समय गुट निरपेक्षता की नीति की अग्नि परीक्षा हुई।
- अमेरिकी राष्ट्रपति कैनेड़ी ने कहा था ''अमेरिका भारत की तटस्थ नीति का स्वागत करता है।''
- सन् 1963 में सोवियत संघ द्वारा भारत–चीन सीमा विवाद पर भारत का स्पष्ट रूप से खुला समर्थन किया। यह भारत की निर्गुट नीति की शानदार सफलता हैं।
- 1965 ई. के भारत–पाक संघर्ष के समय अमेरिका ने भारत और पाकिस्तान दोनों पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिये।
- 1971 ई. की भारत–सोवियत संधि तथा गुटनिरपेक्षता बांग्लादेश की क्रांति और दक्षिण एशिया में सैनिक शासन की दमनकारी नीति से उत्पन्न संकट में 'भारत – सोवियत मैत्री संधि' भारतीय हितों की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण साबित हुई।
- 1977–1979 में जनता पार्टी सरकार ने असली गुटनिरपेक्षता की घोषणा की ।
- मोरारजी देसाई का कहना था कि ''इन्दिरा गाँधी के जमाने में विदेश नीति एक तरफ झुक गयी थी, इस झुकाव को दूर करना ही असली गुटनिरपेक्षता हैं।''
- मार्च, 1983 में नयी दिल्ली में निर्गुट देशों का सातवाँ शिखर सम्मेलन का आयोजन करके भारत विश्व – स्तर पर निर्गुट आन्दोलन का प्रवक्ता बन गया ।
- इस सम्मेलन में 101 राष्ट्रों ने भाग लिया। श्रीमती इन्दिरा गाँधी अगले तीन वर्ष के लिए निर्गुट आन्दोलन की अध्यक्ष निर्वाचित हुई।
- सतत् विकास एवं सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों की प्राप्ति वर्तमान गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का आधार हैं।
- 120 सदस्यीय गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का 16वाँ शिखर सम्मेलन 26–31 अगस्त, 2013 को ईरान की राजधानी तेहरान में सम्पन्न हुआ।
- इस सम्मेलन में भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा कि ''दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के नाते भारत लोकतांत्रिक और बहुलवादी व्यवस्था के लिए लोगों की इच्छा का समर्थन करता है।''
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद्, विश्व बैंक व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी संस्थाओं में सुधार की आवश्यकताओं पर बल दिया।
- गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का 17 वाँ शिखर सम्मेलन 13–18 सितम्बर, 2016 में वेनेजुएला के पोरलामर में सम्पन्न हुआ।

(2) शान्ति की विदेश नीति (Policy of Peace)

- भारतीय विदेश नीति सदैव ही शान्ति की समर्थक रही हैं।
- हिन्दू सभ्यता का चरित्र और उसकी विशेषताएँ जैसे शांति, समन्वय और सहिष्णुता की भावनाएँ हमारी विदेश नीति का बहुत बड़ा आधार हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 51 में राज्य के नीति निदेशक तत्वों के अंतर्गत विश्व शांति की बात की गयी हैं।
- अन्तर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए भारत शांतिमय साधनों, द्विपक्षीय वार्ताओं, समझौतों व मध्यस्थता, पंच निर्णयों आदि पर बल देता हैं।
- उदाहरणतः 1960 ई. में 'सिन्धु जल संधि' समझौते द्वारा भारत–पाक पानी विवाद को शांतिपूर्ण तरीके से हल किया गया।
- कच्छ के प्रश्न को लेकर जब 1965 ई. में पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया तो भारत ने समस्या के शांतिपूर्ण हल के लिए त्रिसदस्यीय ट्रिब्यूनल स्थापित करना स्वीकार कर लिया।

- सन् 1966 में ताशकन्द समझौते में भारत ने पाकिस्तान को वह क्षेत्र वापिस लौटा दिया जो भारत की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण थे।
- 1971 के युद्ध के बाद भी भारत ने पाकिस्तान के प्रति सद्भावना का दृष्टिकोण अपनाया और 1972 में शिमला में द्विपक्षीय वार्ताओं पर जोर दिया।
- भारत ने राष्ट्रीय हितों का बलिदान कर भी सितम्बर, 1977 के फरक्का समझौते द्वारा कमी वाले दिनों में बांग्लादेश को गंगा का अधिक पानी देना स्वीकार कर लिया।
- 1987 ई. के राजीव जयवर्द्धने समझौते के तहत भारतीय शांति सेना को भारत ने श्रीलंका भेजा।
- 18 मई, 1974 में भारत ने प्रथम अणु शक्ति परीक्षण पोकरण में किया, लेकिन यह परीक्षण शान्तिमय कार्यों के लिए किया गया।
- भारत विश्व शांति के लिए निःशस्त्रीकरण को परम आवश्यक मानता था इसलिए सन् 1963 में आणविक परीक्षण प्रतिबंध संधि पर हस्ताक्षर किए।
- भारत ने 1968 ई. की परमाणु अप्रसार संधि पर इसलिए हस्ताक्षर नहीं किये क्योंकि महाशक्तियाँ इस प्रकार की संधि द्वारा विश्व में परमाणु शक्ति पर अपना एकाधिकार स्थापित करना चाहती थी ।
- भारत ने 25 जनवरी, 1996 को निःशस्त्रीकरण सम्मेलन में व्यापक परीक्षण प्रतिबंध संधि (C.T.B.T.) के बारें में कहा कि यह परमाणु हथियारों को पूरी तरह समाप्त करने के लक्ष्य को पूरा नहीं करता, अतः भारत ने जेनेवा में अन्तर्राष्ट्रीय निःशस्त्रीकरण सम्मेलन (20 अगस्त, 1996) में संधि को वीटो कर दिया।

(3) मैत्री और सह–अस्तित्व की नीति (Policy of Friendship and Peaceful Co existence)

- भारत की विदेश नीति सह–अस्तित्व एवं मैत्री भावना की नीति पर बल देती हैं।
- इस कारण भारत ने अधिकाधिक देशों से मैत्री संधि और व्यावहारिक समझौते किये हैं।
- प्रमुख संधियाँ है जैसे – भारत – नेपाल संधि, भारत–सोवियत मैत्री संधि (1971), भारत–बांग्लादेश मैत्री संधि आदि।

(4) विरोधी गुटों के बीच सेतुबंध बनाने की नीति (Policy of Act as a Mediator between Power Blocs)

- भारत ने गुटबंदी का विरोध जताते हुए सदैव दो गुटों के मध्य तनाव कम करने एवं अन्तर्राष्ट्रीय शांति की स्थापना पर जोर दिया है।
- भारत ने कोरिया, हिन्दचीन, कांगो आदि समस्याओं के समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दिया और दोनों गुटों को समीप लाकर विश्व शांति को स्थापित करने में योगदान दिया।

(5) साधनों की पवित्रता की नीति (Policy of Peaceful Means)

- भारत की विदेश नीति अवसरवादी एवं अनैतिक न होकर साधनों की पवित्रता में विश्वास से प्रेरित हैं।
- साधनों की पवित्रता के कारण ही 1965 ई. का ताशकंद समझौता एवं 1972 ई. का शिमला समझौता किया गया।

(6) साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं प्रजातीय विभेद का विरोध (Oppose to Imperialism, Colonialism and Racialism)

- भारत की आजादी की लड़ाई वास्तव में साम्राज्यवाद के विरूद्ध लड़ाई थी। भारत सभी लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार का समर्थन करता हैं। 1956 ई. में इंग्लैण्ड़ और फ्रांस ने स्वेज नहर के राष्ट्रीयकरण करने के कारण मिश्र पर आक्रमण कर दिया। वे स्वेज नहर को हडपना चाहते थे, भारत ने इस नवीन साम्राज्यवाद का घोर विरोध किया।

- भारत ने फिलिस्तीनी जनता को अपने अधिकार के लिए सदैव प्रयत्न करने का समर्थन किया।
- हिन्दचीन (वियतनाम, कम्बूजिया, लाओस) में अमेरिकी हस्तक्षेप का भारत ने विरोध किया हैं।
- दक्षिण अफ्रीका में प्रजातीय विभेद का विरोध किया हैं।

(7) पंचशील पर जोर देने वाली नीति (Policy of Adhere Panchsheela)

- पंचशील दूसरे राष्ट्रों के साथ शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का सिद्धान्त हैं।
- पंचशील का अर्थ है – व्यवहार या आचरण के पाँच नियम।
- 29 अप्रैल, 1954 को तिब्बत के संबंध में भारत और चीन के बीच हुए समझौते के दौरान पहली बार पंचशील के सिद्धान्तों को लागू किया गया।
- 28 जून, 1954 को प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तथा चीनी प्रधानमंत्री चाऊ एन. लाई ने संयुक्त घोषणा में पंचशील के पाँच सिद्धान्तों को माना, जिन्हें दोनों ही राष्ट्रों ने अपनी–अपनी विदेश नीतियों तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अपनाया।
- अप्रैल, 1955 में 'बाण्डुग सम्मेलन' में इन पंचशील सिद्धान्तों को विस्तृत रूप दिया जिसके बाद विश्व के अधिकांश राष्ट्रों ने इसे मान्यता प्रदान की है।
- 14 दिसम्बर, 1959 को 82 राष्ट्रों की संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने भारत के 'पंचशील' के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया, जिससे पंचशील को संपूर्ण विश्व में मान्यता मिली।
- पंचशील के सिद्धान्त निम्न हैं – (i) एक–दूसरे की प्रादेशिक अखण्ड़ता और सर्वोच्च सत्ता का सम्मान करना। (ii) अनाक्रमण। (iii) एक–दूसरे के आंतरिक मामले में हस्तक्षेप न करना। (iv) समानता और पारस्परिक लाभ (v) शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व।
- पंचशील सिद्धान्त 1928 के केलॉग – ब्रीआं एक्ट के समान था, जिसमें अधिकांश राज्यों ने युद्ध के परित्याग की घोषणा की थी।

(8) संयुक्त राष्ट्र संघ तथा विश्व शांति का समर्थन करने वाली नीति (Policy to Support The United Nations and World Peace)

- भारत संयुक्त राष्ट्र संघ के मूल सदस्यों में से एक हैं। भारत ने सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन में भाग लिया तथा संयुक्त राष्ट्र के चार्टर पर हस्ताक्षर किये।
- कोरिया और हिन्दचीन में शांति स्थापित करने के लिए भारत ने U.N.O. की सहायता की।
- भारत ने U.N.O. के कहने पर कांगो में शांति स्थापना हेतु अपनी सेनाएँ भेजी।
- U.N.O. को भारत ने जो सहयोग किया उसी के कारण अक्टूबर, 2010 में भारत 7 वीं बार सुरक्षा परिषद् का अस्थायी सदस्य चुना गया।
- भारत पहली बार 1950–51 के दौरान सुरक्षा परिषद् का सदस्य रहा।
- 19 वर्ष के अंतराल के पश्चात् भारत के स्थायी प्रतिनिधि हरदीप सिंह पुरी ने सुरक्षा परिषद् की अध्यक्षता अगस्त, 2011 में की।
- भारत के राजदूत चन्द्रशेखर दास गुप्ता को 'आर्थिक और सामाजिक परिषद्' की आर्थिक एवं सांस्कृति अधिकारों संबंधी समिति का सदस्य बनाया गया।
- भारत 2011 में तीसरी बार मानवाधिकार परिषद् के सदस्य के रूप में चुना गया।
- सन 1968 में 'अंकटाड' का दूसरा सम्मेलन भारत में हुआ।
- भारत के बी.एन.राव तथा आर.एस.पाठक अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय के न्यायाधीश पद पर रहे तथा डॉ. नगेन्द्रसिंह मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदासीन रहे।
- भारत की श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित संयुक्त राष्ट्र महासभा का सभापतित्व कर चुकी हैं।
- भारत संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में तीसरा सबसे बड़ा सैनिक सहायता देने वाला देश हैं।

(9) तीसरे विश्व, विशेषकर एशिया तथा अफ्रीका के साथ एकता

- 7 सितम्बर, 1946 को पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि ''हम एशिया के रहने वाले हैं तथा एशिया के लोग दूसरों की अपेक्षा हमारे निकट तथा निकटतम हैं।''
- मार्च, 1947 में दिल्ली मे एशियाई सम्मेलन का आयोजन एशिया–अफ्रीकी एकता के उद्देश्य से किया गया।

(10) स्वतंत्र परमाणु नीति

- प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के कार्यकाल में परमाणु प्रौद्योगिकी का उपयोग केवल शांतिपूर्ण तथा विकास कार्यों के लिए किया जाता था।
- वर्ष, 1966 में इन्दिरा गाँधी ने चीनी आक्रमण के कारण परमाणु नीति के दोहरे पथ को अपनाया।
- 18 मई, 1974 को इन्दिरा गाँधी के कार्यकाल में जैसलमेर के पोकरण में पहला परमाणु परीक्षण किया गया।
- अमेरिका ने 1978 ई. में परमाणु प्रसार को रोकने के लिए परमाणु अप्रसार अधिनियम के तहत तारापुर परमाणु भट्टी के लिए दी जा रही यूरेनियम सप्लाई पर प्रतिबंध लगा दिया।
- प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 11 व 13 मई, 1998 को शक्ति ऑपरेशन के तहत पाँच बहुउद्देशीय परमाणु विस्फोट किए। प्रधानमंत्री ने इसे राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से उचित ठहराया।
- भारत की परमाणु नीति की घोषणा 1999 में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार बोर्ड की ओर से की गई ।
- व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (C.T.B.T.) पर भारत ने जेनेवा निःशस्त्रीकरण सम्मेलन (18 जून, 1996) पर विचार–विमर्श के बाद कहा कि इस संधि के दो प्रस्तावों 'एंट्री इन टू फोर्स' तथा भौतिक सत्यापन पर अपने परमाणु विकल्प खुला रखना चाहता हैं।

भारतीय विदेश नीति का विकास

- भारत की विदेश नीति स्वतंत्र दृष्टिकोण और गुटनिरपेक्षता की रही हैं।
- भारत की विदेश नीति का निरन्तर विकास हुआ हैं। यह एक गतिशील (Dynamic) विदेश नीति हैं

भारतीय विदेश नीति नेहरू युग

- 1946 ई. में नेहरू ने अंतरिम सरकार का नेतृत्व किया एवं स्वतंत्रता के पश्चात् इन्हें देश का प्रथम प्रधानमंत्री बनाया गया। वे 17 वर्षों तक विदेश मंत्री व प्रधानमंत्री रहे।
- पं. जवाहरलाल नेहरू को भारतीय विदेश नीति का सूत्रधार कहा जाता हैं।

(1) स्वतंत्र एवं स्वायत्त नीति

- पं. नेहरू ने स्वतंत्र एवं स्वायत्त विदेश नीति अपनायी जो अपने हितों के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो।

(2) गुट निरपेक्षता की नीति

- शीत युद्ध के दौरान सैन्य गुटों के संघर्ष से अलग गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई।
- गुटनिरपेक्षता की नीति साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं शस्त्रीकरण के विरूद्ध एक आन्दोलन हैं। यह शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का आन्दोलन था।
- यह तीसरी दुनिया की एक समतामूलक व्यवस्था स्थापित करने के लिये साझी आवाज थी।

(3) महाशक्ति का सपना

- पं. नेहरू भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाना चाहते थे।
- नेहरू ने विदेश नीति में आर्थिक और वित्तीय संबंधों को प्राथमिकता दी।
- आज भारत अमेरिका, सोवियत संघ और चीन के बाद स्पष्टतः चौथी महाशक्ति हैं।

(4) एशियाई अफ्रीकी देशों की एकता की नीति

- नेहरू की पहल पर मार्च, 1947 में नई दिल्ली में एशियाई सम्मेलन हुआ।
- दूसरा सम्मेलन जनवरी, 1949 में नई दिल्ली में इण्ड़ोनेशिया के प्रश्न पर आयोजित किया।
- नेहरू ने 1955 ई. के बॉण्डुग सम्मेलन में भाग लेकर एशियाई देशों के बीच सहयोग और मित्रता की भावना को सशक्त किया।

(5) भारत–चीन युद्ध के दौरान विदेश नीति

- नवम्बर, 1962 में चीनी आक्रमण के कारण गुटनिरपेक्षता की नीति की अग्नि परीक्षा हुई।
- 20 अक्टूबर, 1962 को रेडियो से राष्ट्र के नाम संदेश देते हुए पं. नेहरू ने कहा कि भारत अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति का अनुसरण करता रहेगा।
- अमेरिका और ब्रिटेन ने भारत को सहायता प्रदान की।
- पं. नेहरू का मानना था कि असंलग्नता की नीति को छोड़कर अमेरिकी गुट में शामिल होने के प्रतिस्वरूप भारत–चीन सीमा संघर्ष शीत–युद्ध का एक अंग बन जाता।
- नेहरू ने व्यवहारवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए निर्णय लिया कि भारत अपनी सुरक्षा के लिए सभी मित्र राष्ट्रों से सहायता लेगा, किन्तु गुटनिरपेक्षता की नीति को नहीं छोड़ेगा ।

नेहरू की विदेश नीति की आलोचना

- नेहरू की विदेश नीति आदर्शवाद से प्रभावित थी, क्योंकि उन्होंने दुनिया में शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व पर बल दिया।
- तिब्बत संबंधी नीति भारतीय विदेश नीति की आदर्शवादिता और असफलता का उदाहरण हैं।
- नेहरू की विदेश नीति के कारण दो शक्तिशाली शत्रु देश चीन और पाकिस्तान ने भारत को चुनौती दी।
- भारत की राष्ट्रमण्ड़ल की सदस्यता दास मनोवृति का परिचायक हैं।
- पाकिस्तान द्वारा स्वतंत्रता के बाद 1948 ई. में भारत पर कबायली आक्रमण किया गया तो नेहरू इस मुद्दों को लेकर U.N.O. में गये और कश्मीर का मुद्दा विश्व राजनीति की शक्ति के संघर्ष में उलझ गया।
- **मूल्यांकन** – नेहरू यथार्थवादी थे, इसलिए उन्होंने भारत के सामाजिक, आर्थिक विकास पर बल प्रदान किया। नेहरू ने आर्थिक विकास को आधारभूत ढाँचा माना।
- नेहरू की विदेश नीति ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रतिष्ठा और सम्मान दिलाया।